

उत्तराखंड की जनजातीय चित्रकला: सांस्कृतिक धरोहर के रूप और रंग

डॉ. मंतोष यादव*

उत्तराखंड, जिसे 'देवभूमि' के नाम से जाना जाता है, अपनी अद्वितीय सांस्कृतिक और प्राकृतिक धरोहर के लिए प्रसिद्ध है। इस राज्य की लोक जनजातीय चित्रकला न केवल यहां की पारंपरिक कलात्मकता को अभिव्यक्त करती है, बल्कि जनजातीय जीवन के मूल्यों, धार्मिक आस्थाओं और प्रकृति के साथ उनके गहरे संबंध को भी दर्शाती है। उत्तराखंड के जनजातीय समाज में थारू, भोटिया, गोंड, और जौनसारी जनजातियाँ प्रमुख हैं, और उनकी चित्रकलाएँ उनके जीवन और सांस्कृतिक विविधताओं की पहचान हैं। इन चित्रकलाओं में स्थानीय जीवनशैली, धार्मिक प्रतीक, प्रकृति के तत्व, और सामूहिक परंपराएँ जीवंत रूप में प्रस्तुत की जाती हैं। थारू जनजाति की दीवार चित्रकला, जिसे अक्सर मिट्टी के घरों और दीवारों पर उकेरा जाता है, उनके सामाजिक और धार्मिक विश्वासों का प्रतीक होती है। भोटिया जनजाति की चित्रकला में पौराणिक कथाएँ और देवताओं का चित्रण देखने को मिलता है, जो इनकी गहरी आध्यात्मिकता का प्रतीक है। गढ़वाल और कुमाऊँ क्षेत्रों में देवी-देवताओं, प्राकृतिक दृश्यों, और पारंपरिक लोकगाथाओं पर आधारित चित्रकलाएँ भी प्रसिद्ध हैं। इन चित्रकलाओं में प्राकृतिक रंगों और सरल रेखाओं का उपयोग किया जाता है, जो इनके सौंदर्य को विशिष्ट बनाता है। पारंपरिक तकनीकों का पालन करते हुए, ये चित्रकला शैलियाँ पर्यावरण और सांस्कृतिक संतुलन के महत्व को भी उजागर करती हैं। उत्तराखंड की लोक जनजातीय चित्रकला केवल सौंदर्य का प्रदर्शन नहीं है, बल्कि यह उनकी पहचान, धरोहर, और अस्तित्व का प्रमाण भी है। यह कला आधुनिक समय में भी अपनी प्रासंगिकता बनाए हुए है और राज्य की सांस्कृतिक संपन्नता को संरक्षित करने में सहायक है। यह न केवल उत्तराखंड की सांस्कृतिक पहचान को सुदृढ़ करती है, बल्कि देश-विदेश में इसकी लोकप्रियता भी बढ़ा रही है।

उत्तराखंड की चित्रकला: सांस्कृतिक धरोहर के रूप और रंग

गढ़वाली और कुमाऊँनी चित्रकला: ऐपन- गढ़वाली और कुमाऊँनी चित्रकला उत्तराखंड की विशिष्ट सांस्कृतिक धरोहर का हिस्सा है, जिसमें पारंपरिक शैली और विभिन्न धार्मिक और सांस्कृतिक प्रतीकों का चित्रण किया जाता है। ऐपन, उत्तराखंड के ग्रामीण इलाकों में प्रमुख रूप से प्रचलित एक विशेष प्रकार की चित्रकला है, जिसे दीवारों, फर्शों, और अन्य सतहों पर उकेरा जाता है। ऐपन का उद्देश्य केवल सजावट नहीं, बल्कि यह सांस्कृतिक और धार्मिक प्रतीकों के माध्यम से जीवन के विभिन्न पहलुओं को व्यक्त करना है। ऐपन, उत्तराखंड के गढ़वाल और कुमाऊँ क्षेत्रों में विशेष रूप से घरों और मंदिरों की दीवारों और फर्शों पर बनाया जाता है। इसे आमतौर पर विवाह, तीज, और अन्य धार्मिक अवसरों पर चित्रित किया जाता है। ऐपन का मुख्य उद्देश्य सौंदर्य और शांति के साथ-साथ सकारात्मक ऊर्जा का संचार करना होता है। यह कला विशेष रूप से महिलाओं द्वारा की जाती है, जो अपनी कला के माध्यम से समाज में शांति और समृद्धि की कामना करती हैं।

सामग्री और विधि- ऐपन चित्रकला में उपयोग की जाने वाली सामग्री साधारण और प्राकृतिक होती है। इनमें प्रमुख रूप से हल्दी (पारंपरिक पीला रंग) और चूना (सफेद रंग) का प्रयोग होता



है। सिंदूर और चाक का उपयोग भी रंग बनाने में किया जाता है। प्राकृतिक रंगों का इस्तेमाल किया जाता है जैसे मिट्टी, पौधों से प्राप्त रंग और खनिजों से तैयार रंग। जड़ी-बूटियाँ और वनस्पतियाँ कुछ ऐपन चित्रकलाओं में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

विधि: ऐपन चित्रकला की विधि बहुत ही साधारण होती है, जो हाथों और विभिन्न साधनों का प्रयोग करती है। यह चित्रकला पारंपरिक रूप से दीवारों, फर्शों, और लकड़ी की सतहों पर बनाई जाती है। ऐपन की प्रक्रिया में प्रमुख रूप से निम्नलिखित चरण होते हैं:

सतह तैयार करना: सबसे पहले दीवार या फर्श को अच्छी तरह से साफ किया जाता है और फिर उसे चिकना किया जाता है।

रंगों का मिश्रण: प्राकृतिक रंगों को पानी के साथ मिलाकर चित्रकला के लिए उपयुक्त गाढ़ा पेस्ट तैयार किया जाता है।

रचनात्मक डिजाइन: चित्रकला में सामान्यतः सरल और संरचित डिजाइन होते हैं, जैसे मंडल, फूल, पतियाँ, और अन्य धार्मिक प्रतीक। इन डिजाइन को हाथों या एक सरल उपकरण का उपयोग करके उकेरा जाता है।

रंग भरना: डिजाइनों में रंग भरने के लिए पारंपरिक रंगों का उपयोग किया जाता है। यह रंग साधारण रूप से हाथ से या छोटे ब्रश से भरे जाते हैं।

विषय (Subject)- ऐपन चित्रकला में धार्मिक प्रतीकों और देवी-देवताओं का चित्रण प्रमुख होता है। देवी लक्ष्मी, गणेश, सूर्य, चंद्रमा, और विभिन्न देवी-देवताओं के चित्र ऐपन में प्रमुख रूप से देखे जाते हैं। ऐपन में अक्सर प्राकृतिक दृश्य, जैसे फूल, पतियाँ, फल, और पेड़, चित्रित किए जाते हैं, जो जीवन के शुद्धता और समृद्धि को दर्शाते हैं। ऐपन चित्रकला का प्रमुख उद्देश्य आध्यात्मिक उन्नति और सकारात्मक ऊर्जा का संचार करना होता है। इसके लिए विशेष प्रतीकों जैसे स्वास्तिक, त्रिशूल, और अन्य धार्मिक संकेतों का उपयोग किया जाता है। ऐपन चित्रकला समाज और संस्कृति से संबंधित चित्रण भी करती है, जैसे विवाह समारोह, लोक त्योहार, और अन्य पारंपरिक गतिविधियाँ। गढ़वाली और कुमाऊँनी चित्रकला, विशेष रूप से ऐपन, उत्तराखंड की सांस्कृतिक धरोहर का अभिन्न हिस्सा है। यह कला न केवल सौंदर्यपूर्ण होती है, बल्कि यह धार्मिक, सांस्कृतिक, और सामाजिक संदेश भी देती है। ऐपन की सरलता, पारंपरिकता, और सांस्कृतिक प्रतीकों के माध्यम से यह कला उत्तराखंड के ग्रामीण जीवन की गहरी समझ और धार्मिक आस्थाओं को व्यक्त करती है।

प्रमुख लोक जनजातीय चित्रकला शैलियाँ:

थारू जनजाति चित्रकला- थारू जनजाति उत्तराखंड और उत्तर प्रदेश के तराई क्षेत्र में मुख्य रूप से निवास करती है। यह जनजाति अपनी सांस्कृतिक धरोहर, जीवनशैली और कला के लिए प्रसिद्ध है। थारू जनजाति की चित्रकला मुख्य रूप से उनकी धार्मिक, सामाजिक और पारंपरिक जीवनशैली का प्रदर्शन करती है। यह चित्रकला विशेष रूप से दीवारों, लकड़ी, कागज, और कपड़े पर उकेरी जाती है और इनका उद्देश्य सामाजिक घटनाओं, धार्मिक विश्वासों, और प्राकृतिक दृश्यों को चित्रित करना होता है। थारू जनजाति की चित्रकला में गहरी सांस्कृतिक और धार्मिक छाप है, जो उन्हें अपने लोक जीवन से जोड़ती है। थारू कला में रंग, रूप, और पैटर्न का प्रयोग अत्यधिक महत्वपूर्ण होता है, और यह चित्रकला उनके पारंपरिक आचार-व्यवहार, लोककथाएँ, और देवताओं की पूजा से प्रेरित होती है। थारू चित्रकला की विशेषताएँ इसकी सरलता और गहरी भावना से जुड़ी होती हैं, जो इसके गहरे सामाजिक और धार्मिक संदर्भ को स्पष्ट करती हैं।

सामग्री और विधि:

थारू जनजाति की चित्रकला में उपयोग की जाने वाली सामग्री पारंपरिक और प्राकृतिक होती है। इस कला में आमतौर पर मिट्टी, रंगीन पाउडर, लकड़ी, और अन्य प्राकृतिक स्रोतों का उपयोग किया जाता है।

प्राकृतिक रंग- थारू चित्रकला में अक्सर मिट्टी, रेजिन, वनस्पति से प्राप्त रंग, और खनिजों से बने रंगों का प्रयोग किया जाता है। यह रंग दीवारों, लकड़ी या कपड़े पर चित्रित किए जाते हैं। लकड़ी: चित्रकला में लकड़ी की सतह पर उकेरी गई छवियाँ देखी जाती हैं, जो ठोस और स्थायित्व प्रदान करती हैं। कागज और कपड़ा: कभी-कभी चित्रकला के लिए कागज और कपड़े का भी इस्तेमाल किया जाता है, जो कला को लचीला और बहुमुखी बनाता है।

उकेरना और चित्रित करना: थारू चित्रकला में मुख्य विधि उकेरने और चित्रित करने की होती है। दीवारों पर चित्रकला उकेरी जाती है, जबकि लकड़ी और अन्य सामग्रियों पर पेंटिंग की जाती है। चित्रकला में विभिन्न चित्र और प्रतीकों का प्रयोग किया जाता है। **स्वाभाविक पैटर्न:** थारू चित्रकला में प्राकृतिक पैटर्न, जैसे पत्तियाँ, फूल, और अन्य प्राकृतिक रूपों का चित्रण किया जाता है। ये पैटर्न कलाकार की कल्पना और प्रकृति के साथ गहरे जुड़ाव को दर्शाते हैं। **विभिन्न रूपों का प्रयोग:** इस चित्रकला में ज्यादातर रूपांकन का प्रयोग किया जाता है, जिसमें देवताओं, सामाजिक घटनाओं, और अन्य धार्मिक प्रतीकों का चित्रण होता है।

विषय:- थारू जनजाति की चित्रकला के विषय मुख्य रूप से उनके धार्मिक विश्वासों, जीवनशैली, और प्रकृति से संबंधित होते हैं। इन विषयों में विशेष रूप से निम्नलिखित शामिल होते हैं- थारू कला में धार्मिक चित्रण प्रमुख स्थान रखता है। इसमें देवताओं और देवी-देवताओं की छवियाँ, पूजा की विधियाँ, और पारंपरिक अनुष्ठान शामिल होते हैं। यह चित्रकला थारू समाज की आध्यात्मिकता को स्पष्ट रूप से प्रदर्शित करती है। थारू चित्रकला में प्राकृतिक दृश्यों का चित्रण भी अत्यधिक किया जाता है, जिसमें जंगल, नदियाँ, पर्वत, और अन्य प्राकृतिक तत्व प्रमुख होते हैं। ये चित्रकला उनके ग्रामीण जीवन और प्राकृतिक सौंदर्य के प्रति गहरी श्रद्धा को दर्शाते हैं। थारू चित्रकला में उनकी सामाजिक जीवनशैली, पारंपरिक रीति-रिवाज, और अनुष्ठानों का भी चित्रण होता है। इसमें विवाह, खेती, और अन्य सांस्कृतिक परंपराओं के दृश्य शामिल होते हैं।



थारू चित्रकला में लोककथाएँ, मिथक और पारंपरिक कथाएँ चित्रित की जाती हैं। ये चित्रकला रूप में धार्मिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण होते हैं, और उनकी पहचान को संरक्षित करते हैं। थारू जनजाति की चित्रकला न केवल कला के रूप में बल्कि समाज और संस्कृति के एक अभिन्न अंग के रूप में भी महत्वपूर्ण है। यह कला थारू समाज की जीवनशैली, धर्म, और सांस्कृतिक विरासत को जीवित रखने का एक प्रभावी साधन है।

भोटिया जनजाति की चित्रकला-

उत्तराखंड के पहाड़ी क्षेत्रों में बसी भोटिया जनजाति अपनी समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर और परंपराओं के लिए प्रसिद्ध है। इनकी चित्रकला एक महत्वपूर्ण कड़ी है, जो इस जनजाति की जीवनशैली, विश्वासों, और पारंपरिक

कथाओं को दर्शाती है। भोटिया जनजाति की चित्रकला न केवल उनके धार्मिक और सांस्कृतिक जीवन को अभिव्यक्त करती है, बल्कि यह पहाड़ी जीवन की कठिनाइयों और सौंदर्य को भी उजागर करती है। भोटिया जनजाति के चित्रकला रूप में स्वाभाविकता, सरलता और प्रकृति के प्रति गहरी संवेदनशीलता पाई जाती है।

सामग्री और विधि:

भोटिया जनजाति की चित्रकला में प्रयुक्त सामग्री और विधियाँ अद्वितीय और पारंपरिक होती हैं। इन चित्रों में प्राकृतिक रंगों का इस्तेमाल होता है, जो स्थानीय पौधों, खनिजों, और अन्य प्राकृतिक संसाधनों से तैयार किए जाते हैं। रंग बनाने के लिए भोटिया कलाकार मिट्टी, गहरे लाल और पीले रंग के खनिज, और वनस्पति से रंग निकालते हैं। इन रंगों को दीवारों, लकड़ी की सतहों, और कपड़ों पर इस्तेमाल किया जाता है।

चित्रकला की विधि भी पारंपरिक होती है, जिसमें हाथों से चित्रित करने की तकनीक का प्रयोग किया जाता है। भोटिया जनजाति के कलाकार अपनी कलाओं को दीवारों पर उकेरते हैं, खासकर घरों, पूजा स्थलों, और मंदिरों में। वे अपनी कला में प्राकृतिक रंगों के अलावा, स्वदेशी ब्रश, लकड़ी की छड़ी, और अन्य साधारण उपकरणों का उपयोग करते हैं।

विषय- भोटिया जनजाति की चित्रकला का मुख्य विषय उनका धार्मिक और सांस्कृतिक जीवन है। चित्रों में देवी-देवताओं, प्राकृतिक दृश्यों, पर्वतों, नदियों, और अन्य धार्मिक प्रतीकों का चित्रण होता है। ये चित्र न केवल कला का रूप होते हैं, बल्कि सामाजिक और धार्मिक रीति-रिवाजों का भी अभिव्यक्त करते हैं। इन चित्रों में स्थानीय परंपराओं, मिथकों, और किंवदंतियों को चित्रित किया जाता है, जो इस जनजाति की जीवनशैली और विश्वासों को प्रकट करते हैं। इसके अलावा, भोटिया जनजाति की चित्रकला में उनकी प्रमुख घटनाओं, जैसे विवाह, उत्सव, और युद्ध के दृश्य भी देखने को मिलते हैं। इन चित्रों में जीवन के सुख-दुःख और संघर्षों को दर्शाया जाता है, जो उनके समाज के अनुभवों और वास्तविकताओं को प्रतिबिंबित करते हैं। भोटिया जनजाति की चित्रकला उनके जीवन के अभिन्न हिस्से के रूप में संरक्षित रहती है और यह उनकी सांस्कृतिक पहचान का प्रतीक बन चुकी है।

उत्तराखंड की जनजातीय चित्रकला एक सांस्कृतिक धरोहर

"उत्तराखंड की जनजातीय चित्रकला: सांस्कृतिक धरोहर के रूप और रंग" विषय पर आधारित इस अध्ययन में यह स्पष्ट होता है कि उत्तराखंड की जनजातीय चित्रकला न केवल एक कला रूप है, बल्कि यह राज्य की सांस्कृतिक धरोहर का अहम हिस्सा है। इन चित्रकलाओं में स्थानीय जीवन, प्रकृति, धार्मिक विश्वास और पारंपरिक कथाओं की गहरी छाप देखी जाती है, जो न केवल एक दृश्य अनुभव प्रदान करती है, बल्कि समाज की आत्मा को भी व्यक्त करती है। इन चित्रकलाओं के रूप और रंग में स्थानिक विविधताएँ हैं, जो प्रत्येक जनजातीय समुदाय की विशिष्टता को दर्शाती हैं। चित्रकला की यह विधा सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक संदर्भों में गहरी समझ का प्रतीक है, और यह पीढ़ियों से चली आ रही पारंपरिक शिल्पकला का संरक्षण करती है। हालांकि, आधुनिकता और वैश्वीकरण के प्रभावों से ये चित्रकलाएँ कुछ हद तक विलीन हो रही हैं, फिर भी इन्हें संरक्षित करने और बढ़ावा देने के प्रयास समाज में जागरूकता बढ़ा रहे हैं। इस अध्ययन से यह भी साबित होता है कि जनजातीय चित्रकला को समझने और संरक्षित करने के लिए और अधिक शोध और सांस्कृतिक समर्थन की आवश्यकता है, ताकि यह आने वाली पीढ़ियों तक जीवित रहे।

उत्तराखंड की जनजातीय चित्रकला: आधुनिक स्वरूप एवं भविष्य की आशा और चुनौतियाँ-

उत्तराखंड की जनजातीय चित्रकला, जो सदियों पुरानी परंपराओं और सांस्कृतिक धरोहरों का हिस्सा रही है, आज एक नये दौर से गुजर रही है। इस कला में प्रकृति, देवी-देवता, और जनजीवन की अभिव्यक्ति को रंगों और रूपों के माध्यम से दर्शाया जाता है। पारंपरिक चित्रकला में बांस, लकड़ी, और कागज का उपयोग होता था, लेकिन अब आधुनिक सामग्री और तकनीकों का समावेश होने से इसके स्वरूप में बदलाव आया है। कलाकार अब कैनवास, एक्रेलिक रंग, और अन्य आधुनिक सामग्री का प्रयोग कर रहे हैं, जिससे यह कला अधिक विविध और समकालीन बन गई है। भविष्य में, इस कला को बढ़ावा देने और संरक्षित करने की बड़ी चुनौतियाँ हैं। डिजिटल मीडिया और सोशल मीडिया के बढ़ते प्रभाव से इस कला को वैश्विक स्तर पर पहचान मिल सकती है, लेकिन साथ ही इसके पारंपरिक रूप की संरक्षा भी आवश्यक है। सरकारी और गैर-सरकारी संगठनों द्वारा इस कला के प्रचार-प्रसार के प्रयासों के बावजूद, जनजातीय कलाकारों को आधुनिक बाजार में अपनी पहचान बनाने में कठिनाइयाँ आ रही हैं। भविष्य में, इस कला का समावेश शिक्षा और कला के अन्य क्षेत्रों में होने से इसके अस्तित्व को सुरक्षित रखा जा सकता है, जिससे नई पीढ़ी इस अनमोल धरोहर को संजोए रखेगी।